भारत : सामान्य परिचय - भारत की तटरेखा Paper III Bilingual II
INDIA General Introduction - Coastline of India.

भारत की तटरेखा (Coastline of India) → भारत में 2 प्रकार की तटरेखा पाई जाती है —

भारत की तटरेखा

1. पश्चिमी तटरेखा
   - a काठियावाड़ तट
   - b कोंकण तट
   - c मालाबार तट एवम
   - d दक्षिणी तट

2. पूर्वी तटरेखा
   - (I) दक्षिण की ओर का भाग कोरोमण्डल तट और
   - (II) उत्तर की ओर का भाग काकीनाडा या उत्तर सरकार तट

1 **पश्चिमी तटरेखा (Western Coastline)** → यह तटरेखा खम्भात की खाड़ी से कैमोरिन अन्तरीप तक फैली हुई है। यह उत्तरी भाग में कोंकण तट, दक्षिण भाग में मालाबार तट के नाम से प्रसिद्ध है।

ओमान की खाड़ी से खम्भात की खाड़ी तक की तट भूमि यद्यपि रचना की दृष्टि से समान है किन्तु शैलों की दृष्टि से भिन्न है।

पश्चिमी तट पर हिन्द महासागर के किनारे नर्मदा के उत्तर में चपटी निम्न भूमियाँ

और मुम्बई की तंग पट्टी में स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक विभेद पाया जाता है। नर्मदा के उत्तर में समुद्र में भूमि का विस्तार एक साधारण बात है किन्तु ताप्ती के दक्षिण से मुम्बई तट के समीप भूमि का समुद्र में कोई विस्तार दृष्टिगोचर नहीं होता। नर्मदा के उत्तर में जो समुद्र तट दलदल भूरा बना है, वह ना तो अधिक पुराना है और न अच्छी तरह जम ही पाया है।

पश्चिम तट को सामान्यतः चार भागों मे बाँटा जाता है।

(I) काठियावाड़ तट

II कोकण तट

III मालाबार तट एवम

IV दक्षिणी तट

(I) काठियावाड़ तट → यह सौराष्ट्र (कच्छ) से सूरत तट विस्तृत है। इसी तट पर कच्छ की खाड़ी और खम्भात की खाड़ियां है जिनके कारण यह तट काफी कटा-फटा है। इस तट पर अनेक द्वीप (कच्छ की खाड़ी में नोरा, कारम्भर, बेदी पिरोटन, खम्भात की खाड़ी में शियाल, पारम है। इन द्वीपों पर मछुआरों की बस्तियां बसी है। इन

तट पर अनेक बन्दरगाह पाये जाते है - मांडवी, कांडला, नवलखी, नवी बन्दर, बेदी, सिक्का, जोडिया ओखा, द्वारका, पोरबन्दर, वैरावल, सोमनाथ, नवसारी भावनगर भरूच और सूरत।

II कोंकण तट → यह तट सूरत से गोआ तक फैला है। यह एक संकरी पट्टी के रूप में है। मुम्बई के निकट सालसेट और एलीफेंटा द्वीप है। मुम्बई का पोताश्रय प्राकृतिक है। इस तट पर भी मछुआरो की अनेक बस्तियाँ मिलती है। इस तट के मुख्य बन्दरगाह माहिम, मुम्बई, न्हावासेवा, जयगढ़, रत्नागिरि, मालवान और मार्मागोआ है। महाराष्ट्र का तट बेसाल्टिक लावा का बना है।

III मालाबार तट → यह प्राचीन रूपांतरित शैलों द्वारा बना हुआ बहुत ही क्षत - विक्षत तट है। पश्चिमी घाटों से निकलने वाली अनेक छोटी-छोटी और वेगपूर्ण नदियों द्वारा लाये गये अवसादों के जमने से यहाँ पर काँप मिट्टी के कई मैदान बन गये है। तट के ऊपर लहरों का भी आक्रमण होता रहता है। विशेषकर दक्षिण-पश्चिमी मानसून के समय जिससे समस्त तट भूमि के ऊपर अनेक बालुका-स्तूप बन जाते है।

इस तट का भूगर्भिक इतिहास महाराष्ट्र तट की भाँति ही है। दोनों मे अन्तर केवल इतना है

कि यहाँ खाड़ियों, झीलों और लैगूनों की अधिकता है; जबकि महाद्वीपीय तट पर इसका अभाव पाया जाता है। इसके अलावा यहाँ उत्तरीय नदियों के मुहानों पर दलदल और अनूप झीलें अधिक पायी जाती हैं। कोच्चि के समीप समुद्र तट के समानांतर पृष्ठ जल की सुविधा होने से अरब सागर से केरल के भीतरी भागों तक नावों द्वारा पहुँचा जा सकता है। मंगलोर, कोच्चि, कोजीकोड, एलप्पी, कोल्लम, करवाड़, होनावर, कासरगोड, कुण्डापुर, इर्नाकुलम, माहे तिरुवनन्तपुरम् आदि इस तट के मुख्य बंदरगाह हैं।

(IV) दक्षिणी तट → यह निमग्न तट है। यहाँ समुद्र की औसत गहराई 42 मी है किन्तु इस तट पर द्वीपों का पूर्ण अभाव मिलता है। श्रीलंका तट के अतिरिक्त तट के समीप कहीं भी प्रवाल रचनाएँ नहीं मिलती। श्रीलंका के दक्षिण-पूर्व की ओर तट से 24 से 32 किलोमीटर दूर प्रवाल रचनाएँ दिखायी पड़ती हैं। सेतुबंध लहरों और धाराओं के प्रभाव से बनी भित्ति है जो श्रीलंका एवम् मुख्य भूमि के मध्य फैली है।

= Next Class